

لَا يَرُدُّ الْقَضَاءُ إِلَّا الدُّعَاءَ (مشكوة)

दुआ के सिवा कोई चीज तक्दीर को नहीं फेर सकती (मिशकात)

बे नज़ीर आमल

मुतरजम्

عیدِ غوث و خواجہ رضا و گل اولیاء
محمد جمال الدین خان قادری رضوی
ضلع بہرائچ شریف یو. پی. ایس
موبائل نمبر :- 7860520899 ←



अज् अफ़ादात मुबारका

ताजदारे अहले सुन्नत शहजादए आला
हजरत मुफ्ती आजम हिंद हजरत अल्लामा

शाह मुस्तफा रज़ा कादरी नूरी

अलैहिरहमा

उबैदे गौसो ख्वाजः रज़ा व कुल औलिया
महम्मद जमालुद्दीन खान कादिरी रज़वी
जिलअ् बहराइच शरीफ़ यूपी, अल-हिन्द
मोंबाइल नम्बर **+917860520899**

उबैदे गौसो ख्वाजः रज़ा व कुल औलिया
महम्मद जमालुद्दीन खान कादरी रज़वी
जिलअ बहराइच शरीफ़ यूपी, अल-हिन्द
मोबाइल नम्बर +917860520899

786/92

दुआ के सिवा कोई चीज़ तकदीर को नहीं
फेर सकती (मिशकात)

बे नज़ीर अमल

(मुतरजम)

عَبِيدُ غَوْتٍ وَخَوَاجَةِ رَضَا وَكُلِّ أَوْلِيَاءِ
مُحَمَّدٍ جَمَالُ الدِّينِ خَانَ قَادِرِي رَضَوِي
ضَلَعُ بَهْرَائِجِ شَرِيفِ يُو. پی. الہند
مُؤَبَّائِلِ نَمْبَر : ← 7860520899

अज अफ़ादात मुबारका
ताजदारे अहले सुन्नत शहज़ादए आला
हज़रत मुफ़्ती आज़म हिंद हज़रत अल्लामा
शाह मुस्तफ़ा रज़ा कादरी नूरी अलैहिर्रहमा
रज़वी किताब घर

423, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
Phone : 011-23264524 Mob. : 9910920970

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यह दुआ ताजदारे अहले सुन्नत शहजादा आला हज़रत आकाए नेमत हज़रत सैयदी अलहाज अल्लामा मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा कादरी रज़वी नूरी सरकार मुफ़्ती आजम हिंद अलैहिर्रहमा रिज़वान (बरैली शरीफ) ने तकसीम हिंद के मौके पर इसी तरह शायी फरमाई थी जो आज भी काम आमद व मुफ़ीद है। (अहमद उमर दोसा हशमती)

या खुदा तुम तक है सबका मंतहा
औलियाए को हुक्म नुसरत कीजिये

मुसलमानो! तुमने वह किया जो न करना चाहिये था। अपने गुनाहों से तौबा करो और इस दुआ को सुबह व शाम बा वुजू एक एक बार पढ़ो और इसको लिखकर अपने घरों और दुकानों में लगाओ अपने बच्चों के गले में डालो नमाज़ की पाबंदी करो। इंशा अल्लाह तआला तमाम आफ़ात अरज़ी व समावी हर किस्म के अग़यार के हमलों से महफूज़ी, हर ज़ाहिरी व बातिनी बला का रद्द होगा और हर ज़िल्लत व पसती से बचते रहोगे।

फकीर मुस्तफ़ा रज़ा कादरी बरैलवी
गोफ़ेरलहु

अमल बे नज़ीर क्या है?

यह अमल बे नज़ीर बहुत ही मस्सूस दर मस्सूस है इसमें बहुत से असरार व रमूज़ पेशीदा हैं। बुजुर्गों से सीना ब-सीना यह अमल चला आ रहा है। हिंदुस्तान बटवारे के बाद क़स्तान बन गया था, जुल्म व सितम के बाज़ार ऐसे गर्म हुए कि हर तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा छा गया। कोई किसी का पुरसाने हाल न था, हथ्र का सा समां पैदा हो गया था, जिसको मुआविन व मददगार समझा जाता था वही उसे ज़िन्ह कर डालता। गर्ज मुहाफिज़ भी टाकू बन गये थे, शहर के शहर, बस्तियां की बस्तियां वीरान होती जा रही थीं। अज़ला के अज़ला शौलों की लपेट में आ गये। लोगों ने घर बर, करेबार, दीलत, सब छोड़कर भागना

शुरू कर दिया था। यहां तक कि दर्दनाक आलम पैदा हो गया था कि बीवी बच्चों की भी एक दूसरे को खबर न थी। औरतों की गोद से बच्चा छीनकर सामने ही ज़िह्न कर दिया जाता, पिसतानें काट दी जातीं, रेल में मुसलमान ज़िन्दा बैठता, मुर्दा मिलता। गर्ज खून की नदियां, बह रही थीं। इंसानी खून से होली खेली जा रही थी। औरतों को गैरों ने अपने घरों में लौंडियों से बदतर बनाकर रखा था, लोगों ने अपना नाम और लिबास तक बदल दिया था। यह सब दिलसोज़, रुह फरसा और कर बनाक मंज़र बरैली के ताजदार सरकार मुफ्ती आजम हिंद अलैहिर्रहमा से देखा न गया चुनांचे इसी आलम में आंसुओं की खानी के साथ इस अमल बे नज़ीर को तहरीर किया और फरमाया “भगोड़ो भागे नहीं मसाजिद व

मजारात, दौलत व जायदाद दूसरों के सुपुर्द न करो अपने गुनाहों से तौबा करो, नमाज़ की पाबंदी करो, अल्लाह पर भरोसा करो, और इसको लिखकर अपने बच्चों के गले में डालो, दुकानों, मकानों, में लिखकर लगा दो और सुबह व शाम इसका विर्द करो। इंशा अल्लाह तआला तमाम आफाते आरज़ी व समावी, हर फिस्म के अग़यार के हमलों से महफूज़ी, हर जाहिरी व बांतिनी बलाओं का रद्द होगा और हर ज़िल्लत व पसती से बचते रहोगे। (फकीर मुस्तफा रज़ा कादरी गफ़रला)

हज़रत मुफ़्तीए आज़मे हिंद का मज़कूरा बाला लाहे अमल मुल्क के जिस जिस गोशे में पहुंचा निहायत बर्क़ रफ़्तारी के साथ असर अंदाज़ हुआ। भूली हुई गाफ़िल कौम एकदम ख्याबे गफ़लत से बेदार हुई। राकिम की उम्र

उस वक़्त तकरीबन 10-11 साल थी इसको खूब याद है कि मुसलमानों ने हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म हिंद के लाहया अमल को कबूल किया और बावजूद यह कि लोग तर्क वतन पर आमादा थे और काफी तादाद में तर्क वतन कर चुके थे, फिर भी मुसाजिद में नमाज़ वक़ता में काफी तादाद में लोग आते लोगों ने कोट और पतलून तह करके रख दिये थे, कुर्ता पायजामा और सर पर टोपी का इस्तेमाल आम कर दिया था नमाज़ों के बाद मुसलमान मज़कूरा बाला अमल को पढ़ते और बे पढ़े लिखे लोगों को याद कराते, मुसाजिद में नमाज़ पढ़ने वालों की तादाद इतनी ज़्यादा हो गयी थी कि आज़ादी वतन से पहले इतने नमाज़ पढ़ने वाले पांचों वक़्तों की नमाज़ों में नज़र न आते थे, हर तरफ़ इस्लामी माहौल नज़र आता था लोग

अल्लाह अल्लाह करते नज़र आते लोगों ने रेडियो और अख़बार पढ़ना अमूमन तर्क कर दिया जो अख़बार बीन थे वह बहुत मुख़्तसर अख़बार पढ़ लेते ज़्यादा वक़्त अमल मज़कूरा को पढ़ने में ही सर्फ़ होता। मुसलमानों में अजीब किस्म का जोश व ख़रोश पैदा हो गया था वह दुनिया के तमाम सहारों से बेनियाज़ होकर सिर्फ़ अल्लाह उसके महबूब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लिम की हिमायत और नुसरत के तालिब हो गये थे। मुसलमानों में मज़हबी माहोल बन जाने के बाइस उख़वत इस्लामी का वाफ़र जज़्बा पैदा हो गया था अगर कहीं किसी मक़ाम पर हंगामा होता तो दूसरे मुहल्ला और मक़ाम के लोग अपने भाईयों की हिफ़ाज़त के लिये पहुंच जाते इससे पहले यह हाल था कि अगर कहीं बलवा होता तो

मुसलमान खबर सुनकर अपने घरों में बंद हो जाते थे लेकिन अब उनकी हालत तबदील हो चुकी थी, वह अल्लाह पर एतेमाद व भरोसा करके हालात से नबरद आजमा होने का हौसला अपने अंदर पैदा कर चुके थे तर्क वतन की हवा जो इन्तेहाई तेज़ चल रही थी अब मदधम पड़ चुकी थी।

हुजूर मुफ्तीए आजम से मुलाकात करने हजारों अफराद आसतना मुबारका पर हाज़िर होते हुजूर मुफ्तीए आजम हिंद सबको ही मज़कूरा बाला लाहया अमल पर अमल करने की हिदायत फरमाते मुसलमानों की हिम्मत अफजाई करके हौसला पैदा करते तर्क वतन पर आमादा लोगों को तर्क वतन से बाज़ रहने की तरगीब देते।

चूंकि आज यह मुल्क फिरका परस्ती का शिकार है फसादात की होलनाकियां तबाही और बरबादी हमरा वक़्त कौम के सर पर लटकती रहती है इसलिये वह लाहया अमल आज भी इतना ही मुफीद है जैसे आज़ादी वतन के बाद के हालात जिन को हम गुज़िश्ता औराक में कलम बंद कर चुके हैं। मुफीद साबित हुआ था लिहाज़ा हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म हिंद का मुरत्तब लाहे अमल मिन व अन नक़ल करंते हैं ताकि मिल्लते इस्लामिया इस्तेफ़ादा कर सके।

बे नज़ीर अमल (मुतरजम)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत
मेहरबान रहम वाला

अव्वल व आखिर तीन तीन बार यह दुरुद
शरीफ पढ़ें।

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا دَافِعَ الْبَلَاءِ وَالْوَبَاءِ
وَالْقَحْطِ وَالْبَرِّضِ وَالْأَلَمِ يَا ذِنِ اللَّهِ. وَعَلَى إِلِكِ
وَأَصْحَابِكِ يَا مُحَلِّلِ يَا ذِنِ اللَّهِ.

तर्जमा : रहमते कामिला और सलामती
नाज़िल हो आप पर ऐ बला वबा खुशक साली,
बीमारी और ग़म के दूर फरमाने वाले, अल्लाह
के हुक्म से और सलात व सलाम हो आप के

आल व असहाब पर ऐ मुशिकलात को हल
फरमाने वाले, अल्लाह के हुक्म से।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

كُنْ لِي جَارًا مِّنْ شَرِّ حَلَمِيدٍ إِذَا حَسَدَ ۝ وَشَرِّ الْحَيْنِ

وَالْإِنْسِ وَاتَّبَاعِهِمْ أَن يُغَيِّرَ عَلَيْنَا أَحَدٌ مِنْهُمْ وَ

يُطْغِيَنِي عَزَّ جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ لَا

إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْحَلِيمُ الْكَرِيمُ ۝ سُبْحَانَ رَبِّ

السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝ لَا إِلَهَ

إِلَّا أَنْتَ عَزَّ جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ ۝

بِسْمِ اللَّهِ عَلَى نَفْسِي بِسْمِ اللَّهِ عَلَى دِينِي ۝ بِسْمِ اللَّهِ
 عَلَى أَهْلِي وَمَالِي وَوَلَدِي ۝ بِسْمِ اللَّهِ عَلَى مَا آعْطَانِي
 بِسْمِ اللَّهِ عَلَى جَمِيعِ أَهْلِ السُّنَّةِ ۝ اللَّهُ رَبِّي
 لَا أُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا ۝ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ
 أَعِزُّ وَأَجَلُّ وَأَعْظَمُ مِنَّا أَخَافُ وَأَحْذَرُ عِزَّ جَارِكَ
 وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ ۝ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ
 مِنْ شَرِّ نَفْسِي وَمِنْ شَرِّ شَيْطَانٍ مَرِيدٍ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ
 جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ
 إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

إِنَّ وَلِيَّيَ اللّٰهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى
 الصّٰلِحِيْنَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
 عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ تَوَكَّلْتُ
 عَلَى اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ۝

तर्जमा : अल्लाह के नाम से शुरू जो
 निहायत मेहरबान रहम वाला

ऐ अल्लाह, आसमानों के परवर्दिगार और
 अज़मत वाले अर्श के रब, हो जाता तू पनाह
 देने वाला हासिद के शर से जब वह हसद
 करे। और जिन्न व इन्स और उनके साथियों
 के शर से कि उनमें से कोई हम पर हमला
 करे और मुझे गुमराह करे बड़ी है तेरी निगहबानी
 और बुजुर्ग है तेरी तारीफ और नहीं है कोई

माबूदे बरहक तेरे सिवा, नहीं है कोई लायक
 इबादत मगर अल्लाह जो हिल्म वाला और
 करीम है पाकी ब्यान करता हूं मैं सातों आसमान
 और अर्श अज़ीम के परवर्दिगार, की नहीं है
 कोई माबूदे बरहक तेरे सिवा, कुव्वत वाली है
 तेरी पनाह और बर तर है तेरी तारीफ़ और
 नहीं है कोई माबूद तेरे सिवा, अल्लाह के नाम
 से बरकत हासिल करता हूं अपनी जान की
 हिफाज़त के लिये अल्लाह का नाम अपने दीन
 पर, अल्लाह का नाम लेता हूं अपने घर वालों
 और अपने माल और अपनी औलाद पर,
 अल्लाह का नाम लेता हूं उस चीज़ पर जो
 अल्लाह ने दिया। अल्लाह का नाम लेता हूं
 तमाम अहले सुन्नत के लिये। अल्लाह मेरा रब
 है, उसकी ज़ात में किसी को शरीक नहीं
 ठहराता। अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह बहुत

बड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है। वह बहुत इज्जत वाला बहुत बुलंद और बहुत बड़ा है, उससे जिससे में डरता हूं और खौफ खाता हूं इज्जत वाली है तेरी बारगाह और बर तर है तेरी तारीफ और नहीं है कोई माबूदे बरहक तेरे सिवा, ऐ अल्लाह बेशक मैं पनाह मांगता हूं तेरी अपने नफ़स के शर से और सरकश शैतान के शर से और हर ज़ालिम नाफ़रमान के शर से बस अगर वह फिर जायें तो तुम कहो काफी है मुझको मेरा अल्लाह कि नहीं है कोई माबूदे बरहक उसके सिवा, उस पर मैंने भरोसा किया और वह अर्श अज़ीम का परवर्दिगार है। बेशक मेरा मालिक वह अल्लाह है जिसने किताब (कुरआन) नाज़िल फ़रमाई, और वह नेकियों वाली है तो अगर वह फिर जायें पस तुम कहो काफी है मुझको अल्लाह, कि नहीं है कोई

माबूदे बरहक उसके सिवा, उस पर मैंने भरोसा किया और वह अर्श अजीम का परवर्दिगार है। भरोसा किया मैंने अल्लाह पर और नहीं है नेकियों की ताकत और गुनाहों से बचने की कुव्वत मगर अल्लाह के फज़ल से जो बलंदी और अज़मत वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 بِسْمِ اللَّهِ بِأَيْنَا ○ تَبَارَكَ اللَّهُ حِطَانُنَا ○
 يَسِين سَقَفْنَا ○ حَمَعَسَقَ حَمَائِتُنَا ○ كَهَيْعَصَ
 كَفَائِتُنَا ○ فَسَيَكْفِيكُهُمُ اللَّهُ وَهُوَ
 السَّيِّعُ الْعَلِيمُ سِئْرُ الْعَرْشِ مَسْبُولُ
 عَلَيْنَا وَكَلِمَاتُ اللَّهِ أَقْفَالُ عَلَيْنَا ○
 وَعَيْنُ اللَّهِ نَاطِرَةٌ إِلَيْنَا ○ وَيَحْوِلُ اللَّهُ لَا

يَقْدِرُ أَحَدٌ عَلَيْنَا ۝ وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ
مُحِيطٌ ۝ بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ
۝ إِنَّ كُلَّ نَفْسٍ لَنَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝ لَا إِلَهَ
إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ
أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ
فَهُمْ لَا يَبْصُرُونَ ۝ صُمُّكُمْ عُمَىٰ فَهُمْ لَا
يَرْجِعُونَ ۝ هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ۝
يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ
تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
فَاَنْفُذُوا لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَنٍ ۝ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا

خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنْتُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجِعُونَ
 كَهَيْعَتِ خَمٍ عَسَقَ قُلٌّ مِّنْ يَّكَلُوْكُمْ بِاللَّيْلِ
 وَالنَّهَارِ مِنْ شَرِّ كُلِّ حَاسِدٍ وَحَاقِدٍ وَ
 سَارِقٍ وَطَارِقٍ وَحَيَّةٍ وَمَيِّتَةٍ وَعَقْرَبٍ وَ
 أَسَدٍ وَفِيلٍ وَذَبِّبٍ وَكَلْبٍ ۝

तर्जमा : अल्लाह के नाम से शुरू जो
 निहायत मेहरबान रहम वाला। बिस्मिल्लाह
 हमारा दरवाजा है तबारकल्लाह हमारी दीवारें
 यासीन हमारी छत हा मीम ऐन सीन काफ
 हमको बचाने वाला काफ हा या ऐन सुआद
 हमारे लिये काफी पस काफी है उनके लिये
 अल्लाह और वह बहुत ज़्यादा सुनने जानने

वाला है अर्श का पर्दा हम पर साया कुनां है और अल्लाह के कलिमात हमारे लिये ताले हैं और अल्लाह की निगाहे करम हम को देख रही है और अल्लाह की कुव्वत से हम पर कोई कुदरत नहीं पायेगा। अल्लाह उनके पीछे से उन्हें घेरे हुए है बल्कि वह कमाले शर्फ वाला कुरआन लौहे महफूज़ में है। कोई जान नहीं जिस पर निगहबान न हो। नहीं है कोई माबूद अल्लाह के सिवा वह हई वह कय्यूम है और हमने उनके आगे दीवार बना दी और उनके पीछे एक दीवार और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो उन्हें कुछ नहीं सूझता। बहरे गुंगे अंधे तो वह फिर आने वाले नहीं, यह वह दिन है कि वह बोल नहीं पायेंगे। ऐ जिन्न व इन्स के गरोह अगर तुम से हो सके कि आसमानों और ज़मीनों के किनारों से निकल जाओ, तो निकल

जाओ! जहां निकलकर जाओगे उसकी सलतनत है, तो अपने रब की कौन सी नेमत को झुटलाओगे। तो क्या यह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी तरफ फिरना नहीं? तुम कहो कि तुम्हारी कौन निगहबानी करेगा रात और दिन में हर हासिद, कीना परवर, चोर, रात की बलाओ, सांप, मुरदार, बिच्छू, शेर, हाथी, भेड़िया और कुत्ते

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ
 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ
 وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

के शर से।

مُحِيطٌ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مَّا شَاءَ اللَّهُ كَانَ وَمَا لَهُ
 يَسْأَلُهُ يَكُنْ ○ اللَّهُمَّ هُوَ الْخَافِظُ ○
 اللَّهُمَّ هُوَ الْغَافِرُ ○ اللَّهُمَّ هُوَ الشَّافِي ○
 اللَّهُمَّ هُوَ الْوَافِي ○ اللَّهُمَّ هُوَ الْكَافِي ○
 اللَّهُمَّ هُوَ الْبَجِيدُ ○ اللَّهُمَّ هُوَ الْوَاحِدُ ○
 اللَّهُمَّ هُوَ الصَّبْدُ ○ اللَّهُمَّ يَا وَلِيَّ الْوَلَاءِ وَيَا
 كَاشِفَ الضُّرِّ وَالْبَلَاءِ وَيَا سَامِعَ الدُّعَاءِ رُدِّ
 عَنِّي الْبَلَاءَ وَالْوَبَاءَ وَالْجَلَاءَ وَالْفَجَاءَ بِحُرْمَةِ
 النَّبِيِّ الْبُصْطَفَى صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ
 وَسَلَّم ○ اللَّهُمَّ احْفَظْ مِنْ جَمِيعِ أَعْدَائِنَا

اللَّهُمَّ احْفَظْ مِنْ جَمِيعِ بَلَائِنَا اللَّهُمَّ
 يَا شَافِيَ يَا كَافِيَ يَا مُعَافِيَ يَا دَافِعُ يَا رَافِعُ
 يَا وَاحِدُ يَا أَحَدُ يَا صَمَدُ يَا فَرْدُ يَا وَثَرُ يَا لَمْ يَلِدْ
 وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ○
 يَا قُدُّوسُ يَا سَلَامُ وَصَلِّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى
 خَيْرِ خَلْقِهِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ
 أَجْمَعِينَ ○ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
 نَبِيِّكَ الْمُصْطَفَى وَحَبِيبِكَ الْمُجْتَبَى وَ
 رَسُولِكَ الْمُرْتَضَى وَآلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَخُرِّيَّاتِهِ
 وَأَهْلِ بَيْتِهِ وَأَزْوَاجِهِ تَسْلِيمًا كَثِيرًا كَثِيرًا
 ○ بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ ○ وَيَا خَيْرُ وَيَا

قَيُّوْمٌ وَيَافَرُّدٌ وَيَا حَكَمٌ وَيَا عَدْلٌ وَ
 يَا قُدُّوْسٌ وَيَا وَدُودٌ وَيَا هَادِي وَيَا أَكْرَمَ
 الْكَرَمِيْنَ. آمِيْنَ.

(सूर: इख़लास सात मर्तबा)

पनाह मांगता हूं मैं अल्लाह की, शैतान मरदूद से
 अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला

तुम फरमाओ वह अल्लाह एक है अल्लाह
 बे नियाज है न उसकी कोई औलाद
 न वह किसी से पैदा हुआ और न उसके जोड़
 का कोई।

वह इहाता करने वाला है हर चीज़ का
 अल्लाह ने जो चाहा हुआ और जो नहीं चाहा
 नहीं हुआ। अल्लाह हाफिज़ है अल्लाह बख़्शाने

वाला है अल्लाह शिफा देने वाला है अल्लाह
 वफा करने वाला है अल्लाह काफी है अल्लाह
 बुजुर्ग है अल्लाह एक है अल्लाह बे नियाज़ है
 अल्लाह मुहब्बत का मालिक है। ऐ तकलीफ
 और बला के दूर फरमाने वाले और ऐ दुआ
 सुनने वाले फेर दे तू मुझसे बबा और वहा और
 वतन से दूरी और अचानक मुसीबत को, नबी
 मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदके
 में, ऐ अल्लाह तू हिफाज़त फरमा हमारे तमाम
 दुश्मनों से, ऐ अल्लाह तू बचा हमको तमाम
 बलाओं से, ऐ अल्लाह शिफा देने वाले ऐ
 काफी ऐ आफियत देने वाले, ऐ मुसीबत दूर
 फरमाने वाले, ऐ बलंदी देने वाले, ऐ अकेला,
 ऐ एक ऐ बे नियाज़ ऐ तंहा ऐ ताक ऐ जिसकी
 कोई औलाद नहीं और न किसी से पैदा हुआ

और न उसके जोड़ का कोई ऐ पाक व मुनज़्ज़ह
 ऐ सलामती देने वाले और अल्लाह रहमते
 कामिला नाज़िल फरमाये तमाम मख़लूक से
 बेहतर हमारे सरदार मुहम्मद और उनके सब
 आल व असहाब पर, ऐ अल्लाह रहमते कामिला
 नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद पर जो
 तेरे बरगुज़ीदा नबी और मुन्तख़ब महबूब और
 पसंदीदा रसूल हैं और उनके आल व असहाब
 पर और फरमा बरदारों और घर वालों और
 बीवियों पर बहुत बहुत सलाम तेरी रहमत के
 सड़के में ऐ तमाम रहम फरमाने वालों में ज़्यादा
 रहम फरमाने वाले ऐ हई और ऐ कय्यूम और
 ऐ अकेला ऐ फैसला करने वाले ऐ इंसाफ
 फरमाने वाले और ऐ कुदूस और ऐ मुहब्बत
 फरमाने वाले और ऐ रहनुमाई करने वाले ऐ

तमाम करम करने वालों से ज़्यादा करीम।

यह दुआ रोज़ाना सुबह व शाम पढ़ें दुआ और मुंदरजा ज़ैल तावीज़ गले में डालें या बाजू पर बांधें। हर काम मक़सद के लिये आज़मूदा और दफ़ा आफ़त व परेशानी व हिफ़ाज़त दुश्मन के वास्ते मुज़र्रब है। घर के हर फ़र्द को लिखकर पहनायें बहुत ही नफ़ा बऱ्ख़ा व मुफ़ीद साबित होगा। सुबह से मुराद आधी रात ढलने से तुलूअ आफ़ताब तक और शाम से मुराद ज़व्वाल से गुरुबे आफ़ताब तक है।

۹۲-۷۸۶

۳۹۲	۹۹۱	۹۹۶	۱۳۰
۹۹۵	سلام	شافی	۹۹۲
۱۳۲	حفیظ	حافظ	۳۹۰
۹۹۰	۳۸۹	۱۳۳	۹۹۷

يَا وَكِيلُ يَا رَقِيبُ يَا سَلَامُ يَا كَبِيرُ يَا مُحِيطُ
 إِنَّ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيفٌ فَاللَّهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَهُوَ
 أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ إِنَّ كُلَّ نَفْسٍ لَنَا عَلَيْهَا حَافِظٌ

कामयाबी हर मकसद और हुसूले गल्बा व जफर के लिये चंद तीर ब-हदफ़ दुआयें

(1) नमाज़े पंजगाना के बाद आयतुल कुर्सी शरीफ़ पढ़ते रहें। रात को सोते वक़्त बा नीयत हज़ार मअ बिरिमल्लाह शरीफ़ रहीम के मीम को लामे अलहम्द से मिलाते हुए पूरी सूरह फातेहा एक बार। आयतुल कुर्सी शरीफ़ एक बार चारों कुल एक एक बार सूरह इख़लास के सिवा कि वह तीन बार अव्वल व आख़िर दुरुद शरीफ़ तीन तीन बार। बिरिमल्लाह शरीफ़ पढ़कर सोने को लेट जायें।

(2) बाद नमाज़े फज़्र कब्ल तुलूअ आफ़ताब और बाद नमाज़े मग़िब।

حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

10 बार

• رَبِّ اِنِّي مَسْنِي الطُّرُقَ وَآتَاكَ اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ 10 बार

• رَبِّ اِنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ 10 बार

• سَيَهْرَمُ الْجَمْعُ وَيُولُونَ الدُّبُرَ 10 बार

• اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُ بِكَ

مِنْ شُرُوْرِهِمْ 10 बार

• بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا يَطُرُ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِيْ

الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ

الْعَلِيْمُ 3 बार

• رَبَّنَا لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا

بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذَلِكَ اِنَّكَ اَنْتَ

السَّمِيعُ الْعَلِيْمُ 3 बार

● سُبْحَنَ اللّٰهُ وَبِحَمْدِهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ
مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ
أَعْلَمُ أَنَّ اللّٰهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ اللّٰهَ
قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا
3 बार

● أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ الثَّمَانِيَةِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ
يَا حَافِظُ يَا مُحِيطُ
3 बार

● وَالشَّمْسِ وَالْقَمَرِ وَالنُّجُومِ مُسَخَّرَاتٍ
بِأَمْرِهِ إِلَّا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللّٰهُ
رَبُّ الْعَالَمِينَ
3 बार

- अपनी और सब मुसलमानों की हिफाजत की नीयत करें।
- सौ बार सूरह फातेहा को वक़्त सुबह या

शब मुकर्रर करके मअ बिरिमल्लाह शरीफ
रहीम के मीम को लामे अलहम्द से मिलाते
हुए या यूं करें-

बाद नमाजे फज्र	30 बार
बाद नमाजे जुहर	25 बार
बाद नमाजे अस्त्र	20 बार
बाद नमाजे मग़िब	15 बार
बाद नमाजे ईशा	10 बार

जब पढ़ें तो अपने मकरसद में कामयाबी के
लिये दुआ भी करें जिन्हें फुरसत न हो वह
नमाज़ के बाद 7-7 बार ही पढ़ लिया करें और
दुआ करें इतनी भी मुहलत न पायें तो सुबह व
शाम 7-7 बार पढ़ा लिया करें।

फकीर मुस्तफा रजा कादरी बरैलवी
(अज़ ज़मीमा अल-वज़ीफातुल करीमा मतबूआ बरैली शरीफ)

बराए इसाले सवाब

ताजु शरीआ हज़रत मुफ्ती मुहम्मद

अख्तर रज़ा क़ादरी

अज़हरी बरैलवी अलैहिर्रहमा

उबैदे ग़ौसी ख़्वाज: रज़ा व कुल औलिया
मुहम्मद ज़मालुद्दीन ख़ान क़ादरी रज़वी
ज़िलज़ बहराइच शरीफ़ यूपी, अल-हिन्द
मोबाइल नम्बर +917860520899

और

मुलक शाम (सीरया) व यमन
के मरहूमीन व मरहूमात
शहीदों के लिए

पेश करदा

साकिब अंसारी, बरैली शरीफ़

E-mail:sakib.mymail@gmail.com